किरातार्जुनीयम् - संस्कृत-साहित्य के इतिहास में भारवि B.A. I st yr. + III yr.
29.04.2020

"'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के उद्भट रचयिता के रूप में जाने जाते हैं"। इनके काव्य भावपक्ष की अपेक्षा कला पक्ष के प्रदर्शन पर ही अधिक बल देते हैं। पाण्डित्य-प्रकर्ष की अभिव्यक्ति और मूल-विषय का त्याग करके लम्बे वर्णनों में उलझ जाना इस मार्ग की विशेषता है।

'किरातार्जुनीयम्' भारवि की एकमात्र उपलब्ध कृति है। अठारह सर्गों में उपलब्ध इस महाकाव्य का कथानक महाभारत के वनपर्व के कुछ अध्यायों पर आश्रित है। वनवास-काल में अर्जुन द्वारा कौरवों पर विजय-प्राप्ति के लिए हिमालय पर्वत पर जाकर तपस्या करने, किरातवेशी शिव से युद्ध कर पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति करने, इन्द्रादि द्वारा अर्जुन को विभिन्न अस्त्रों को देने की कथा शामिल है। इनमें पाशुपत अस्त्र तक की प्राप्ति ही मुख्य कथा में वर्णित है।

महाकाव्य में सर्गों की कथा इस प्रकार है - प्रथम सर्ग में द्वैतवन में वनेचर का आकर युधिष्ठिर को दुर्योधन की प्रजा-पालन-नीति का वर्णन सुनाना, द्वितीय सर्ग में युधिष्ठिर और भीम का वार्तालाप, भीम द्वारा द्रौपदी का समर्थन करते हुए पराक्रम की महत्ता दिखाना, युधिष्ठिर का प्रतिवाद, एवं व्यास का आगमन, तृतीय सर्ग में व्यास द्वारा अर्जुन को शिव-आराधना करके पाशुपत अस्त्र प्राप्त करने का उपदेश, योग-विधि निरूपण करके व्यास का अन्तर्धान होना, यक्ष के साथ अर्जुन का प्रस्थान, चतुर्थ सर्ग में - व्यास प्रेषित यक्ष के साथ अर्जुन का पहुँचना, पंचम सर्ग में - अर्जुन की इन्द्रकील पर्वत पर तपस्या, अप्सराओं द्वारा विघ्न। षष्ठ सर्ग में - गन्धर्वों तथा अप्सराओं का विलास वर्णन, सप्तम सर्ग में - गन्धर्वों तथा अप्सराओं की जलक्रीड़ा एवं उद्यान क्रीड़ा का वर्णन, अष्टम सर्ग में सायंकाल, चन्द्रोदय, पान, मानभंग तथा प्रभात-वर्णनादि का चित्रण, नवम सर्ग में - अप्सराओं की चेष्टाएँ तथा विफलता, दशम सर्ग में। मुनि रूप में इन्द्र आगमन और अर्जुन को शिव की आराधना के लिए प्रेरित करना, ग्यारहवें सर्ग में। बारहवें सर्ग में - अर्जुन के पास 'मूक' नामक दानव का शूकर रूप में आगमन एवं किरातवेशी शिव का आगमन। तेरहवें सर्ग में दानव का अंत, शिव के अनुचर और अर्जुन में विवाद,

चौदहवें सर्ग में सेना सहित शिव का आगमन और सेना के साथ अर्जुन का युद्ध, पंद्रहवें सर्ग में - युद्ध वर्णन, सोलहवें सर्ग में - शिव अर्जुन का अस्त्रयुद्ध एवं मल्ल युद्ध, सत्रहवें सर्ग में शिव सहित सेना के साथ अर्जुन का युद्ध, अठारहवें सर्ग में मुख्य रूप से अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति, इन्द्र द्वारा अर्जुन को विभिन्न अस्त्रों को प्रदान करना वर्णित है। स्पष्ट तौर पर यह कहा जा सकता है कि प्रकृति-वर्णन, क्रीडावर्णन एवं युद्ध वर्णन द्वारा मुख्य-कथा का विस्तार दिया गया है।

अर्थपक्ष की गंभीरता तथा सर्वजनीनता भारवि की विशिष्टता रही है। कृत्रिम भाषा का प्रयोग करते हुए उन्होंने यह स्पष्ट किया कि संस्कृत-काव्य कितना दुरूह हो सकता है। पाण्डित्य-प्रदर्शन की प्रवृत्ति भी भारवि में बहुत अधिक रही है। अनेक अलंकारों और छन्दों का प्रयोग कवि ने भावों की आवश्यकता के अनुरूप ही किया है। कवि अपनी भाषा-शैली के प्रति पूर्ण जागरूक हैं।

भारवि राजनीति के विशेषज्ञ माने जाते हैं इसलिए उस संबंध में अनेक सूक्तियाँ दी हैं - जैसे - प्रकर्षतन्त्रा हि रणे जयश्रीः (3/17), ननु वक्तृविशेष निःस्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः 2/5,

अर्थगौरव से संपन्न यह पद्य बहुधा उद्धृत किया जाता है - 'विषमोऽपि विगाह्यते नयः कृततीर्थः पयसामिवाशयः। स तु तत्र विशेषदुर्लभः सदुपन्यस्यति कृत्यवर्त्म यः। किरात० 2/3

अर्थात् नीतिशास्त्र बहुत दुर्गम है। क्योंकि इसमें प्रवेश फिर भी इसमें लोग प्रवेश करते ही हैं गुरुओं ने मार्ग बनाए हैं। जलाशय में प्रवेश करने के लिए सोपान बना दिए जाने पर सभी लोगों का अवगाहन करने के लिए सरल हो जाता है, वैसे ही यथावह स्थिति नीतिशास्त्र की है।

कलावादी भारवि ने सुन्दर हृदयावर्जक संवादों, काल्पनिक चित्रों तथा रमणीय वर्णनों से इसे भर कर नवीन दिशा का प्रवर्तन किया है। इसलिए कहा गया है - 'प्रकृतिमधुरा भारविगिरः।'

Scanned with CamScanner